खुशहाल ज़िन्दगी 47

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

सब तारीफ़े अल्लाह तआला के लिये हैं जो सारे जहानों का पालनहार है। हम उसी की तारीफ करते हैं और उसी से मदद और माफी चाहते हैं। अल्लाह की लातादाद सलामती, रहमतें और बरकतें नाज़िल हों मुहम्मद सल्ल. पर, आप की आल व औलाद और असहाब रज़ि. पर। व बअद!

तमाम इन्सान हज़रत आदम अलैहि. की औलाद हैं और सब को मिट्टी से पैदा किया गया है। इस तरह सब की असल तो एक है लेकिन कई एतेबार से वो एक–दूसरे से अलग भी हैं। कोई सफ़ेद गौरे रंग का है तो कोई काले रंग वाला, कोई छोटे क़द का है तो कोई बड़े क़द वाला, कोई मोटा है तो कोई दुबला कोई मालदार है, तो कोई गरीब, कोई कंजूस है तो कोई सखी। कोई हर हाल में शुक्र गुज़ार तो कोई लालची। कोई ज़ालिम है तो कोई मज़लूम, कोई सेहतमन्द तो कोई बीमार। कोई मोमिन है तो कोई काफ़िर, कोई नेक व पारसा है तो कोई बद व गुनाहगार। कोई बाकिरदार व खुशअख़लाक है तो कोई बदकिरदार–बद अख़लाक़। कोई पढ़ा–लिखा है तो कोई अनपढ़। अलगरज़ एक–दूसरे से इतने अलग होने के बावजूद एक बात पर सब एक राय हैं और वह है खुशहाल ज़िन्दगी की चाहत। हर इन्सान पुर सुकून ज़िन्दगी गुज़ारना चाहता है। उसके लिए अपनी ताकत भर कोशिश भी करता है। यह अलग बात है कि हर कोई उसे पाने के लिए जो कोशिशें करता है और तरीक़े अपनाता है वह अलग–अलग होते हैं। कोई जाइज़ और हलाल तरीक़े से ख़ुशहाल ज़िन्दगी चाहता है कोई नाजाइज़ और हराम तरीक़े अपना कर तो कोई हलाल व हराम की तमीज़ ही नहीं रखता। ग़रज़ यह कि कोई किसी तरह और कोई किसी तरह इसे पाने की कोशिश करता है।

इस पर्चे के ज़रिये हम मुश्किलात व परेशानियों से छुटकारा पाने और ख़ुशहाल ज़िन्दगी हासिल करने के उन उसूलों को जानने–समझने की कोशिश करेंगे जो हमें अल्लाह ने और उसके रसूल मुहम्मद सल्लललाहु अलैहि व सल्लम ने बतलाएं हैं मुझे उम्मीद है कि इन उसूलों पर अमल करके हम इन्शा अल्लाह ख़ुशहाल ज़िन्दगी गुज़ार सकते हैं।

(1) ईमान व अमल

अल्लाह तआला फ़रमाता है '' जो शख़्स नेक अमल करें, मर्द हो या औरत मगर ईमान वाला हो तो हम उसे यक़ीनन बेहतर ज़िन्दगी अता करेंगे। (नहल–आयत–97) और यह कि ''जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक

अमल किये तो उनके लिए इस दुनिया में खुशहाली भी है और आख़िरत में बेहतरीन ठिकाना भी।'' (रअद–आयत–29)

मतलब यह कि इन्सान अगर सच्चा मोमिन हो, ईमान के तक़ाज़ों को पूरा करता हो, बा किरदार व बा अख़लाक़ हो, अल्लाह के फ़राइज़ को पूरा करता हो, पांचो वक़्त की नमाज़ों का पाबन्द हो, ज़कात अदा करता हो, रमज़ान के फर्ज़ रोज़े बिना शरई उज़्र के न छोड़ता हो, वाल्दैन व रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक करता हो, लेने–देन में सच्चा और वादों को पूरा करने वाला हो, बेईमानी, धोखा व फ़रेब न करता हो, हलाल ज़राय से कमाता हो, और दूसरे बड़े गुनाहों से बचता हो, तो अल्लाह उसे दुनिया में हर तरह की भलाई अता करता है।

अगर हम वाक़ई यह चाहतें है कि हमें बाइज्ज़त और खुशहाल ज़िन्दगी मिले तो हमें भी अल्लाह के दीन को मज़बूती से थामना चाहिये। मनमानी या सुनी सुनाई पर अमल करने के बजाए अल्लाह के अहकाम पर अमल करना चाहिये और अल्लाह का सबसे बड़ा हुकम यह है कि हम सिर्फ़ उसी की इबादत करें और उसमें किसी को शरीक न बनाएं। सिर्फ़ उसी को पुकारें सिर्फ उसी को नफ़े नुक्सान का मालिक समझें। सिर्फ़ उसी को दाता, गौ़स, मददगार, मुश्किल कुशा, हाजत र वा और अमीर औ ग़रीब नवाज़ मानें और इत्तेबाअ और पैरवी अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्ल. की करें। हमारे ऐसा करने से अल्लाह तआला खुश होगा और हमें खुशहाल ज़िन्दगी अता करेगा।

2. नमाज़

नमाज़ अदा करना अल्लाह से क़रीब होने का बेहतरीन ज़रिया है। जैसा कि आप सल्ल. ने फ़रमाया ''बन्दा अपने रब से सबसे ज़्यादा क़रीब उस वक़्त होता है, जब वह सज्दा करता है। लिहाज़ा तुम (सज्दे की हालत में) ज्यादा दुआ किया करो।'' (मुस्लिम–482) और अल्लाह तआला ने फ़रमाया ''ऐ ईमान वालों! सब्र और नमाज़ के ज़रिये मदद मांगों। यक़ीनन अल्लाह सब्र करने वालो के साथ है।'' (बक़रा–आयत–153) मालुम हुआ कि नमाज़ी की अल्लाह मदद करता है। मुसीबतों से उसे निज़ात देता है। नमाज़ अदा करने से दिल को इत्मीनान मिलता है और गमों का बोझ हल्का होता है आप सल्ल. ने फरमाया मेरी आंखो की ठंडक नमाज़ में है।'' (नसाई सही अल जामेअ–3124, मुसनद अहमद–सही)

और यह कि ''तुम रात का क़याम किया करो।क्योंकि यह तुम से पहले के नेक लोगों की आदत थी। रात का क़याम (तहज्जुद)अल्लाह के क़रीब करता है, गुनाहों को मिटाता है, बुराईयों से रोकता है। और जिस्मानी बीमारी को दूर करता है।'' (तिर्मिज़ी, सही अल जामेअ–4079)

3. तक्वा

तक्वे से मुराद अल्लाह से ऐसा डरना है जो बन्दे को अल्लाह की ना फ़रमानी और हराम काम से रोक दे। जब कोई इन्सान अल्लाह से डर कर परहेज़गार बन जाता है और सारे हराम कामों से बचने लगता है तो ''उसके लिए मुसीबतों और परेशानियों से निकलने का कोई न कोई रास्ता खुल जाता है और अल्लाह उसे ऐसी जगह से रिज़्क देता है, जहां से उसे वहम व गुमान भी नहीं होता। जो अल्लाह से डरता है, अल्लाह उसके लिए उसके काम में आसानी पैदा कर देता है।'' (तलाक़–आयत–2 से 4)

''अगर यह बस्तियों वाले ईमान लाते और अल्लाह की ना फ़रमानी से बचते तो अल्लाह उन पर आसमान व ज़मीन की बरकात (के दरवाज़े) खोल देता।'' (आराफ़–आयत–96)

इन आयात से मालूम हुआ कि खुशहाल व कामयाब ज़िन्दगी हासिल करने का बेहतरीन ज़रिया अल्लाह से डरते हुए उसकी ना फ़रमानी करने से बचना है। जबकि हममें से अक्सर की हालत यह है कि हम खुशहाल ज़िन्दगी तो चाहते हैं लेकिन अल्लाह की ना फ़रमानियां करने से भी बाज़ नहीं आते। जैसे नमाज़ों में सुस्ती व गफ़लत, झूट, ग़ीबत, चुगलख़ोरी, सुदी लेन–देन, वाल्दैन व क़रीबी रिश्तेदारों से बद सुलुकी, फिल्में देखना व गाने सुनना वग़ैरह। हम यह भूल जाते है कि अल्लाह की ना फ़रमानी करके खुशहाली मिलना तो दूर उल्टे मौजूदा नैमतें भी छिन जाने का ख़तरा रहता है।

आज बहुत से लोग ऐसे भी हैं जो गुनाह को गुनाह और बुराई को बुराई ही नहीं समझते बल्कि उन्हें बेधड़क किये जाते हैं। ऐसे लोगों को अपनी इस्लाह करने की कोशिश करना चाहियें।

4. तौबा व अस्तगफ़ार

इन्सान पर जो भी मुसीबत आती है। वह उसके अपने गुनाहों की वजह से आती है। इसलिए मुसीबत से छुटकारा पाने के लिए सच्ची तौबा करते हुए अल्लाह से माफी मांगना चाहियें। अल्लाह तौबा करने वालों को पसन्द करता है और उन्हें माफ़ करके खुशहाल बना देता है। इर्शादे बारी तआला है '' तुम्हें जो भी मुसीबत आती है, तुम्हारी अपनी करतूतों की वजह से आती और वह (अल्लाह) तुम्हारी बहुत सी ख़ताओं से दर–गुजर भी करता है।'' (शूरा–आयत–30) और यह कि ''तुम सब अपने रब से माफ़ी मांगो। बेशक वह बड़ा माफ़ करने वाला है। वह तुम पर आसमान से खुब बारिश बरसाएगा। माल व बेटों से तुम्हारी मदद करेगा। तुम्हारे लिए बागात पैदा कर देगा और नहरें जारी करेगा। '' (नूह 10 से 12) जाहिर है यह नेमतें खुशहाली की अलामत है। और तौबा व अस्तग़फ़ार करने ही से मिलती हैं।

5. दुआ

इन्सान को मुश्किलात, ग़मों और सदमों से निजात पाने के लिए दुआ करते रहना चाहिये। क्योंकि खुशहाल जिन्दगी के सारे ख़ज़ानों की चाबियां अल्लाह ही के पास हैं और मुसीबतों व परेशानियों से निजात सिर्फ़ वही दे सकता है। बन्दे के दुआ के लिए उठे हाथों को ख़ाली लौटाना उसे अच्छा नहीं लगता । आप सल्ल. का फ़रमान है ''बेशक अल्लाह हया करने वाला और बहुत मेहरबान है। जब कोई शख़्स उसके आगे हाथ फै़लाता है तो उसे शर्म आती है कि वह उन्हें ख़ाली लौटा दें।'' (अबुदाऊद–1488, इब्ने माजा–3865–सही) और यह कि ''कोई मुसलमान जब कोई ऐसी दुआ करता है जिसमें गुनाह या क़तअ रहमी नहीं होती तो अल्लाह उसे तीन में से एक चीज़ ज़रूर देता है
(1) उसकी दुआ जल्दी कु़बूल कर लेता है।
2. या उस दुआ को ज़खीरा ए आखि़रत बना देता है।
3. या उस जैसी कोई मुसीबत उस से दूर कर देता है। (सही–अदब अल मुफ़रद लिलबानी–सफ़ा–264, तिर्मिज़ी)
दुआ कु़बूलियत के औक़ात में करना बेहतर है जैसे–सज्दे की हालत में, अज़ान और अक़ामत के बीच, जुमे के दिन अस्र के बाद से मग़रिब तक या रात के आखि़री हिस्से में। जब अल्लाह तआला आसमाने दुनिया पर नाज़िल होकर कहता है'' ''क्या कोई है जो मुझसे दुआ मांगे तो मैं उसकी दुआ कु़बूल करूं? क्या कोई है जो मुझ से सवाल करे तों मैं उसका सवाल पूरा करूं? और क्या कोई है जो अपने गुनाहों पर मुझसे माफी मांगे तो मैं उसे माफ़ कर दूं। (मुस्लिम–758)

6. अल्लाह का ज़िक्र

जो लोग दुनियावी परेशानियों व मुसीबतों की वजह से हर वक़्त ग़मज़दा रहते हैं उन्हे चाहियें कि अल्लाह का ज़िक्र ज़्यादा से ज़्यादा करें। इसलिए कि '' जो लोग ईमान लाते हैं, उनके दिल अल्लाह के जिक्र से सुकुन पाते हैं। याद रखो! दिल अल्लाह के ज़िक्र ही से मुत्मईन होते हैं।'' (रअद–आयत–28)
सबसे अफ़ज़ल ज़िक्र ला इलाहा इल्ललललाह'' है। इसी तरह कु़रआने पाक की तिलावत है कि जिसके हर हर्फ़ की तिलावत पर दस नेकियां मिलती हैं। फिर ''सुब्हान अल्लाह अल्हम्दु लिल्लाह व अल्लाहु अकबर'' हैं जो जन्नत के पौधे हैं। ''ला हौला वला कुव्वला इल्ला बिल्लाह'' है जो जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है और ''सुब्हान ल्लाहि व बिहम्दिहि, सुब्हानल्लाहिल अज़ीम है जो अल्लाह को बहुत पसन्द और तराज़ू में बड़े वजनी हैं।

7. शुक्र

इशार्दे बारी है ''याद रखो! तुम्हारे रब ने ख़बरदार कर दिया था कि अगर शुक्र गुज़ार बनोगे तो मैं तुम्हें और ज़्यादा नवाज़ूंगा।'' (इब्राहीम–आयत–7) पता चला कि मौजूदा नैमतों पर अल्लाह का शुक्र अदा किया जाए और उन्हें

अल्लाह की इताअत में खपाया जाए तो न सिर्फ़ यह कि जारी नैमतें बहाल रहती है बल्कि अल्लाह और नैमतों से भी नवाज़ता है और अपने शुक्र गुज़ार बन्दों की ज़िन्दगी को खुशहाल बना देता है। इसलिए शुक्र दिल व ज़बान के साथ–साथ अमलन अदा करना भी ज़रूरी है। क्योंकि जो सच्चा शुक्र गुजार होता है, वह ज़्यादा अल्लाह की इताअत व फ़रमबारदारी करता है।

8. सब्र

दुनिया में हर मोमिन की तक़दीर में अल्लाह ने कोई न कोई आज़माइश लिख दी है। फ़रमाया '' हम तुम्हें ज़रूर आज़माएंगे कुछ खौफ़ और भूख से और माल व जान और फलों की कमी से। आप (ऐ मुहम्मद सल्ल.) सब्र करने वालों को खुशखबरी दे दीजिए जिन्हें जब किसी मुसीबत का सामना होता है तो वोह कहते है, हम यक़ीनन अल्लाह ही के है और हमें उसी की तरफ़ लौट कर जाना है। ऐसे ही लोगों पर अल्लाह की नवाज़िश और रहमत होती है'' (बक़रा–आयत–156–157)

गोया सब्र वह चीज़ है जिससे अल्लाह सब्र करने वाले की ज़िन्दगी को खुशहाल बना देता है और अपने फ़ज़्ल व करम से नवाज़ता है।

अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फ़रमाया ''जब किसी मुसलमान को कोई तक्लीफ़ पहुंचती है तो अल्लाह तआला उसके गुनाहों को इस तरह गिरा देता है जैसे पेड़ से पत्ते झड़ते हैं।'' (बुख़ारी–564, मुस्लिम–2571)

''मोमिन का मामला बड़ा अजीब है। अगर उसे कोई खुशी पहुंचे तो वह शुक्र अदा करता है। इस तरह वह खुशी उसके लिए खै़र की वजह बन जाती है और अगर उसे कोई ग़मी पहुंचे तो वह सब्र करता है और यह भी उसके लिए बाईसे खै़र बन जाता है।'' (मुस्लिम–2999)

9. तवक्कुल (भरोसा)

इर्शादे बारी तआला है ''(ऐ नबी सल्ल!) आप कह दीजिए कि हम पर कोई मुसीबत नहीं आती, सिवाए उसके जो अल्लाह ने हमारी तक़दीर में लिख दी है। वही हमारा सरपरस्त है और मौमिनों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहियें।'' (तौबा–आयत–51) और ''जो अल्लाह पर भरोसा कर ले तो वह उसे काफ़ी है। अल्लाह अपना काम करके रहता है। (तलाक़–आयत–3)

आप सल्ल. का इर्शाद है ''अगर तुम अल्लाह पर उस तरह भरोसा करो, जैसा भरोसा करने का हक़ है तो वह तुम्हें ऐसे ही रिज़्क़ देगा जैसे वह परिन्दों को रिज़्क़ देता है। जो सुबह को ख़ाली पेट निकलते हैं और शाम को पेट भरकर वापिस आते हैं।'' (सही अली जामेअ–5254, इब्नेमाजा)

10. क़नाअत

खुशहाल व कामयाब ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए यह भी ज़रूरी है कि जिस किसी को जितना रिज़्क़ अल्लाह ने दिया है, वह उस पर क़नाअत करे

और हर हाल में अल्लाह का शुक्र अदा करे। बड़े–बेड़ मालदारों को हसरत से देखने के बजाए अपने से कम माल वालों को देखे। अगर किसी मुसीबत या बीमारी में गिरफ्तार है तो अपने से ज़्यादा मुसीबत ज़दा व बीमार पर नज़र डालें। अल्लाह के रसूल सल्ल. का फ़रमान है–''तुम उस शख़्स की तरफ़ देखो जो (दुनियावी एतेबार से तुम से कम तर हो और उसकी तरफ़ नज़र मत डालों जो (दुनियावी एतेबार से) तुम से आगे हो। इस तरह तुम अल्लाह की नैमतों को कम नहीं समझोगे।'' (मुस्लिम–2963) और यह कि ''जो शख़्स इस हाल में सुबह करे कि वह सेहत मन्द हो, अपने आप में पुर अम्न हो और उसके पास एक दिन की खुराक़ मौजूद हो तो गोया उसके लिए पूरी दुनिया को जमा कर दिया गया। '' (इब्ने माजा–4141, तिर्मिजी–2346, हसन)

11. फ़ारिग वक़्त का सही इस्तेमाल

फ़ारिग वक़्त भी अल्लाह की एक नैमत है। जिसकी क़द्र बहुत से लोग नहीं करते। जबकि आप सल्ल. के मुताबिक़ ''दो नैमतें ऐसी हैं जिनमें बहुत से लोग ख़सारे में रहते हैं (1) तन्दरूस्ती और (2) फ़ारिग वक़्त।'' (बुख़ारी–6412) इसलिए फ़ारिग औक़ात का फ़ायदा उठाते हुए इन्सान को ज़्यादा से ज़्यादा नेकियां कमाना चाहिये। क्योंकि कल क़यामत के दिन ''किसी बन्दे के क़दम उस वक़्त तक हिल नहीं सकेंगे जब तक उस से चार सवाल नहीं कर लिये जाएंगे (1) उम्र किन कामों में गुज़ारी? (2) अपने इल्म पर कितना अमल किया? (3) माल कहा से कमाया और कहा खर्च किया (4) अपने जिस्म को किस काम में इस्तेमाल किया?'' (सही अल जामेअ–7300, तिर्मिज़ी)

12. लोगों की परेशानियां दूर करना

अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फ़रमाया ''जो शख़्स यह चाहता हो कि उसकी दुआ कुबुल की जाए व उसकी परेशानी दूर हो तो उसे चाहिये कि वह तंग दस्त की परेशानी को दूर करें।'' (मुसनद अहमद–जिल्द–2–सफ़ा–23)

अल गरज़! अगर हम खुश रहना चाहतें हैं और खुशहाल जिन्दगी गुज़ारना हमारा मक़सद है तो हमें अल्लाह की और उसके रसूल सल्ल. की बतलाई तालीमात को अपना कर इन उसूलों पर अमल करना होगा। सिर्फ़ चाहने से कुछ नहीं होता मक़सद को पाने के लिए कोशिश और मेहनत भी ज़रूरी है।

अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हम सभी को खुशहाल जिन्दगी अता करे।

आमीन!

आपका दीनी भाई

मुहम्मद सईद

मो. 9214836639

9887239649

दिनांक. 18/05/12

माखूज़
ज़ादुल ख़तीब
अज़–मोहम्मद इसहाक़ ज़ाहिद